P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बादरायण व्यास का संस्कृत साहित्य में प्रदान

अनिल कुमार बी. माछी
सहायक प्राध्यापक,
संस्कृत विभाग,
पंचमहल्स आर्ट्स कॉलेज,
देवगढ बरिया, दाहोद,
गुजरात, भारत

सारांश

उपनिषद् काल की सन्ध्या में ही भारतीय मनीषियों ने यह विचार करना शुरू कर दिया था कि केवल वेद के कर्मकाण्ड मूलक पद्धतियों से मानव समाज को न तो समृद्धशाली बनाया जा सकता है और न उनका परम कल्याण ही किया जा सकता है। साथ ही इन उपनिषदों की ज्ञानमूलक प्रवृत्तियों को लेकर चलना तो और ही तलवार की धार पर चलना है। उपनिषदों के ज्ञान को न तो "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय" ही बनाया जा सकता है और न तो विश्वजनीन ही बनाया जा सकता है। क्योंकि मानव प्रकृति की नैसर्गिक दुर्बलताओं को नकारा नही जा सकता।

मुख्य शब्द : व्यास, वेद संहिता, उपनिषद्, भागवत, सस्कृति, साहित्य।

प्रस्तावना

जिस प्रकार भारत की प्राकृतिक सम्पदा का अपरिमिट विस्तार है उसी प्रकार कालक्रम से महर्षि वेदव्यास की साहित्यिक सृष्टि भी लोक के देशव्यापी जीवन में अनन्त बनकर समा गई है। एक प्रकार से सारे राष्ट्र का जीवन ही आज व्यासरूपी महान वटवृक्ष की छाया में आश्रय पा गया है। व्यास, भारतवर्षीय ज्ञान के सर्वोत्कृष्ट प्रतिनिधि बन गये हैं। जैसे भगवान समुद्व और महान मेरु पर्वत दोनों ही रत्नों की खान हैं उसी प्रकार "भारत" भी रत्नों से परिपूर्ण है

यथा समुद्रो भगवान्यथा मेरुर्महागिरि।
उभौ ख्यातौ रत्ननिधी तथा भारतमुच्यते।।[१]

विक्रमादित्य से तीस शताब्दी पूर्व से लेकर पन्द्रह शताब्दी पूर्व तक के किसी युग में व्यास का उदय हुआ था। पुराणो के अनुसार ब्रह्मा से लेकर कृष्ण द्वैपायन तक अठारह व्यासों की परंपरा मिलती है। ये मुख्यतः पुराणों के प्रवचन कर्ता रहे होगे। "जय" नामक उत्तम इतिहास के रचनेवाले अमितोजा महामुनि व्यास, जिनका नाम अठारह व्यासों के अन्त आता है अवश्य ही हमारे चिरपरिचित वे पुराण मुनि हैं जो कुरू पाण्डव युग में इस पृथ्वी पर बदरिकाश्रम और हस्तिनापुर के बीच आते जाते थे। हिमालय के सुरम्य शिखर पर जहाँ नर नारायण नाम के दों पर्वत है वहाँ भागीरथी के समीप विशाला बदरी नामक स्थान पर व्याास ने अपना आश्रम बनाया था। बदरीनारायण के इस प्रदेश के दर्शन के लिये आज भी लाखों तीर्थ यात्री जाते है। विशाला बदरी के पास ही आकाश गंगा है जो व्याास के धूमने का स्थान था। व्यास आश्रम के कण–कण में दिव्य तप की भावना ओतप्रोत थी। वहाँ व्यास ने चार शिष्यों को वैदिक संहिताओं का अध्ययन कराया। पैल ने ऋग्वेद, वैषम्पायन ने यर्जुवेद, जैमिनि ने सामवेद और सुमन्तु ने अर्थववेद संहिताओं का पारायण किया। कहते है कि स्वयं व्याास ने अत्यंन्त परिश्रम करके सारे वैदिक मन्त्रों का वर्गीकरण करके चार संहिताओं में विभाग किया। इस साहित्यिक साधना के कारण उनका नाम वेदव्यास प्रसिद्ध हुआ–

यो व्यस्य वेदांश्चतुरस्तपसा भगवानृषिः।
लोके व्यासत्वमापेदे काष्र्ण्यात् कृष्णत्वमेव च।।[२]

भगवान द्वैयापन मुनि ने अपनी तपस्या के बल से चारों वेदों का अलग–अलग विस्तार करके लोक में "व्यास" पद प्राप्त किया।

शरीर का रंग काला होने के कारण उन्हें कृष्ण भी कहा जाता है।

इसी आश्रम में व्यास जी ने तीन वर्षो में कुरू–पाण्डव युद्ध के बारे में महाभारत नाम के काव्यमय इतिहास को रचा–

त्रिभिर्वर्षैः सदोत्थायी कृष्णद्वैयापनो मुनिः।
महाभारतमाख्यानं कृतवानिदमुत्तमम्।।[३]

प्रतिदिन प्रातःकाल उठनेवाले कृष्ण द्वैयापन मुनि ने इस महाभारत की तीन वर्षों में रचना की। व्यास को वेदान्तसूत्रों का रचयिता भी माना जाता है।

वेदान्तसूत्रों का नाम भिक्षु सूत्र भी है। पाणिनि की अष्टाध्यायी से मालूम होता है कि भिक्षु सूत्र के रचयिता पाराषर्य थे। पराषर के पुत्र होने के कारण व्यास का नाम पाराषर्य भी था। बदरी आश्रम में रहने के कारण उनका नाम बादरायण मुनि भी था। इसी कारण वेदान्त सूत्रों को बादरायण सूत्र भी कहते हैं। पाणिनि के शास्त्र में जो ऐतिहासिक सामग्री मिलती हैं उसे देखते हुए सह विश्वास करने का ठोस आधार है कि वेदान्त सूत्रों की रचना वेदव्यास ने ही की थी। उपनिषदों के अध्यात्म ज्ञान कर सार वेदान्त सूत्र हैं। वेदव्यास ने अपने पुत्र शुकदेव को मोक्षशास्त्र का अध्ययन कराया था। सम्भवतः इसी कारण उन्होंने बादरायण सूत्रों की रचना की हैं।

उपनिषद् काल की सन्ध्या में ही भारतीय मनीषियों ने यह विचार करना शुरू कर दिया था कि केवल वेद के कर्मकाण्ड मूलक पद्धतियों से मानव समाज को न तो समृद्धशाली बनाया जा सकता है और न उनका परम कल्याण ही किया जा सकता है। साथ ही इन उपनिषदों की ज्ञानमूलक प्रवृत्तियों को लेकर चलना तो और ही तलवार की धार पर चलना है। उपनिषदों के ज्ञान को न तो "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय" ही बनाया जा सकता है और न तो विश्वजनीन ही बनाया जा सकता है। क्योंकि मानव प्रकृति की नैसर्गिक दुर्बलताओं को नकारा नही जा सकता। मनुष्य को जहाँ ब्रह्माण्ड तक समज लेने वाला मस्तिष्क मिला है, वहीं पर उसे ऐसा हदय मिला है, जो सुख में सुखी होता है और दुःख में दुखी होता है। सौन्दर्य को देखकर आनन्दित होता है एवं कुरूपता को देखकर धृणा से भर भी जाता हैं। उदासीनता के शुष्क मरुस्थल में प्रवेश करना तो उसने सीखा ही नहीं। प्रत्यूत् वह अभिनव रस सिद्धान्त समन्वित है। फलतः वेद से प्रवाहित होने वाली मन्दाकिनी तृषित जन–जीवन को शान्त नही कर सकी। उपनिषदों की कडवी औषधि जन–मानस के हरे धावों को भर नहीं सकी। अतएव संसार के आधिव्याधि से पीड़ित, दुःख दावाग्नि से दग्ध लाकगों के कल्याण के लिए भारतीय मनीषियों ने एक ऐसे सहज एवं सरस पंथ का अन्वेषण शुरू कर दिया जिस पर सभी पदन्यास कर सकें। मनुष्य की समस्त सहजात वृत्तियों को जिस पर प्रश्रय मिल सके। ऋषियों ने यह अनुभव किया कि निगुण सगुण ब्रह्म एक होकर भी सामान्य व्यक्ति के लिए अगम्य ही है। यद्यपि निगुण एवं सगुण में मात्र नाम का अन्तर है, फिर भी एक साधरण व्यक्ति में वह क्षमता नहीं है कि वह किसी मृगनयनी को विस्मृति से ठांक कर अपने चंचल मन को उस व्यक्ति में सर्वतोभावेन अहर्निश रमा दे जिसको उसने देखा तक नहीं है और न तो उसके बारे में सुना ही है। उसको पता तक नही की वह गोरा है या काला है,सुन्दर है या असुन्दर है। इस प्रकार के अपरिचित व्यक्ति को अपना सर्वस्व बना लेना असम्भव नहीं तो सचमुच एक कठिन कार्य तो अवश्य ही है। अतएव ऋषियों ने अपने निर्गुण ब्रह्म में ही उन समस्त विशेषताओं को आरोपित करने का प्रयास किया जिससें मानव –मस्तिष्क एवं हृदय की समस्त आकोक्षायें समाहित हो जाती हैं। इसके विविध प्रयास किये गये। इस दिषा में श्रीकृष्ण द्वैपायन महर्षि वेदव्यास का प्रयास स्तुत्य है। इस विशिष्ट उददेश्य की सिद्धि के लिए इनको अथक परिश्रम करना पड़ा। इन्होंने देखा कि समय के प्रभाव से प्रत्येक युग में धर्मसंकरता और उसके प्रभाव से भैतिक वस्तुओं की भी शक्ति का ह्रास होता जा रहा है। संसार के लोग श्रद्धाहीन एवं शक्तिहीन होते जा रहे है। उनकी बुद्धि ठीक–ठीक कर्तव्य का निर्णय नही कर पाती और आयु भी कम होती जा रही है। लोंगो की इस भाग्यहीनता को देखकर उन मुनीश्वरों ने अपनी दिव्य दृष्टि से समसत वर्णो और आश्रमों का हित कैसे हो इस पर विचार किया–

परावरज्ञः सऋषिः कालेनाव्यक्तरंहसा
युग धर्मव्यतिकां प्राप्तं भुवि युगे–युगे।
भैतिकानां च भावानाम् शक्ति हासंवतत्कृतम्
अश्रद्धानान्निः सत्तवान्दुर्मेधान् हृसितायुषः।।
दुर्भगाष्च जनान्वीक्ष्य मुनिर्दिव्येनचक्षुषा।
सर्ववर्णाश्रमाणां यद्दध्यौ हितममोधदृक।।[४]

उन्होंने हिमालय की उपत्यकाओं में कठोर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए धोर तप किया और अपनी दिव्य दृष्टि से इतिहास एवं पुराण का साक्षात्कार किया और उन्होंने पुनः सोचा वेदोक्त चातुहोत्रि कर्म लोंगो का हदय युद्ध करनेवाला है। इस दृष्टि से यज्ञों का विस्तार करने के लिए उन्होंने एक ही वेद के चार विभाग कर दिये। व्यासजी के द्वारा ऋक्, यजुः, साम और अथर्व–इन चार वेदों का उद्धार हुआ। इतिहास और पुराणों को पाँचवाँ वेद कहा जाता है–

चातुहोत्रं कर्म शुद्ध प्रजानाम् वीक्ष्य वैदिकम्।
व्यदधाद् यज्ञ सन्तत्यैवेदमेकं चतुर्विधम्।।
ऋग्यजुः सामाथर्वाख्या वेदाष्चत्वार उद्धृताः।
इतिहास प्राणं च पंचमो वेद उच्यते।।[५]

कम समझने वाले पुरूषों पर कृपा करके भगवान् वेद व्यास ने इसलिये ऐसा कर दिया कि जिन लोंगो की बुद्धि या स्मरण –शक्ति नहीं है या कम है वे भी वेदों को धारण कर सकें–

त एव वेदा दुर्मेधैर्धार्यवते पुरुषार्यथा।
एवं चकार भगवान् व्यासः कृष्णसवत्सलः।।[६]

स्त्री–शूद्र और पतित द्विजाति तीनों ही वेद श्रवण के अधिकारी नीरं हैं। इसलिये वे कल्याणकारी शास्त्रसेक्त कर्मों के आचरण में भूल कर बैठते हैं। अब इसके द्वारा उनका भी कल्याण हो जाय, यह सोचकर महामुनि व्यास ने बड़ी कृपा करके महाभारत इतिहास की रचना की–

स्त्री शूद्र द्विजबन्धनां त्रयी न श्रुति गोचरा
कर्मश्रेयसि मूठनां श्रेय एवं भवेदिह
इतिभारतमाख्यानं कृपया मुनिना कृतम्।।[७]

वेदों का विस्तार करने के कारण ही इनका नाम वेदव्यास पड़ा। वे जन्म से ही श्याम वर्ण के थे और द्वीप में पैदा हुए थे। इसलिए इनका नाम कृष्णद्वैपायन भी पड़ा। जब इनकी तपस्या की अग्नि से हिमखण्ड द्रवित होकर बहते हैं तो ज्ञान एवं भक्ति की धारा गंगा–यमुना के रूप में विश्व का षुष्क हृदय सींचती हुई असंख्य लोगों के कण्ठों की प्यास षान्त करती है। पुनः जब यह सरस्वती के अथाह सागर में गोता लगाकर साहित्य सुन्दरी को जो लावण्य प्रदान कर देते हैं तो फिर ऐसा कौन है, जो उदासीन एवं अचल बना रहे।

यह सत्य है कि व्यास जी ने वेद एवं उपनिषदों की परम्परा से हटकर एक अभिनव मार्ग का सृजन किया, किन्तु कहीं भी ऐसा स्थल नहीं, ऐसा पद एवं शौर्य नहीं जो वेद एवं उपनिषदों की किसी मान्यता को खण्डित करता है, प्रत्युत श्री व्यास जी ने वेद एवं उपनिशदों के सिद्धातों की पुष्टि में एक और ही कड़ी जोडने का प्रयास किया है। ये एक क्रान्तिकारी मोड़ के नये प्रकाश के लिये व्यग्र थे, इसलिए सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय रचना का प्रकाश स्तम्भ खडा किया। इनकी रचनाओं में जहाँ एक ओर वेदों एवं उपनिषदों के कर्मकाण्ड तथा आरण्यकों के ब्रह्मज्ञान के दर्शन होते हैं तो दूसरी ओर वेदान्त शास्त्रों के वर्णाश्रम धर्म तथा सांख्य–वैशेषिक एवं न्याय के तर्क ज्ञान आदि से भी इनकी रचनायें ओत–प्रोत है। देवयानी और शर्मिष्ठा जैसे जीवन की तुच्छातितुच्छ लोक धटना से लेकर उच्चतम दार्शनिक तत्त्व का निरुपण भी इनकी रचनाओं में उपलब्ध होता है। वेद और उपनिशदों से प्राणेां के सम्बन्ध को स्पस्ट करते हुए निम्न श्लोक द्रष्टव्य है–

वेदोपनिषदां साराज्जाता भागवती कथा
अत्युत्तमा ततो भाति पथग्यभूताफलाकृतिः।
आमूलाग्रं रसस्तिष्ठन्नास्ते न सवाद्यते यथा
सः भूयः राग्पृथग्भूतः फले विश्व मनोहरः।।
यथा दुग्धे स्थितं सर्पिर्न स्वादायोप कल्पते
पृथग्भूतं हि तद्रव्यं देवानां रस वर्धनम्।
इक्ष्णामपिध्यान्तं शर्करा व्याप्य तिष्ठति
पृथग्भूता च सा मिष्ठातथा भागवती कथा।।[५]

यह भागवत की कथा वेद और उपनिषदों के सार से बनी है। अतः उनसे अलग उनकी फलस्वरूपा होने के कारण बड़ी उत्तम जान पड़ती है। जिस प्रकार रस वृक्ष की जड़ से लेकर शाखा पर्यन्त रहता है किन्तु इस स्थिति में उसका आसवादन नहीं किया जा सकता, वही जब अलग होकर फल रुप में आ जाता है तब संसार में सभी को प्रिय लगने लगते है। दूध में धी रहता है, किन्तु उस समय उसका अलग स्वाद नहीं मिलता वही जब अलग हो जाता है तब देवताओं का भी स्वाद–वर्द्धक हो जाता है।

खांड ईख के और–छोर और बीच में भी व्याप्त रहती है, तथापि अलग होने पर कुछ और ही मिठास होती है। ऐसी ही भागवत की कथा है।

वस्तुतः पुराणों की उपमा पर विस्तृत जलराशि पूर्ण महासागर से दी जा सकती है जिसके अतल गहराई में उपनिषदों के ज्ञान रत्नों का अपार भण्डार है तो उसके उपरी सतह पर वेदों की लोल लहरियाँ अबाध रुप से क्रीड़ा करती रहती हैं साथ ही जिसमें वाचन रुपी चन्द्रोदय होने पर ज्ञान एवं वैराग्य रुपी ज्वार भाट आता है और इसके रजत पुलिन पर आनन्द रुपी बहुमूल्य मणियों को बिखेर देता है जिसे पाकर जनसामान्य भी कुबेर तुल्य हो जाता है।

वेदादिर्वेदमाता च पौरूषं सूक्तमंव
त्रयी भागवतं चैव द्वादशाक्षर एव च।।
द्वादशात्मा प्रयागश्च कालः संवत्सरात्मकः
ब्रह्मणाश्चाग्नि होत्रं च सुरर्भिद्वादशी तथा।।
तुलसी च वसन्तश्च पूरुषोत्म एव च
एतेशां तत्त्वतः प्राज्ञैर्न पृथग्भाव इश्यते।
यष्च भागवतं नित्यं शास्त्रंवाचयेदर्थतोऽनिशम्।।
जन्म कोटी कृतं पापं नष्यते नात्र संशयः।।[६]

"ऊँकार, गायत्री, पुरुष सूक्त तीनों वेद, श्रीमद्भागवद्, ऊँ नमो भगवते वासुदेवायः नमः" यह द्वादश अक्षर मन्त्र, बारह मूर्तियों वाले सूर्य भगवान्, प्रयाग सम्वत्सररुप काल, ब्राह्मण, अग्निहोत्री, गौ, द्वादशी तिथी, तुलसी, वसन्तऋतु और भगवान पुरुषोत्तम इन सबमें बुद्धिमान लोग वस्तुतः कोई भेदनहीं मानते हैं। जो पुरुष अहर्निश अर्थसहित श्रीमद्भागवत शास्त्र का पाठ करता है, उसके करोड़ों जन्मों का पाप नष्ट हो जाता है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।

निष्कर्ष

वस्तुतः इन सबों के सम्मिलित उत्कर्ष को देखकर यही कहना पड़ता है कि–

"एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।

बादरायण व्यास ने ४ वेड १८ पुराण और महाभारत की रचना की हैं। इन कथाओं में सारे विश्व की सर्व कथाओं को सम्मिलित किया है। साहित्य और संस्कृत के विकास को इन कथाओ ने बल दिया है। व्यास ने साहित्य के साथ ही प्रभु के गुणगान किये है और मानव को जीवन का ज्ञान दिया है। वेद और उपनिषद् द्वारा चारों पुरुषार्थ को प्रगट किया है। वस्तुतः इन सबों के सम्मिलित उत्कर्ष को देखकर यही कहना पड़ता है कि–

",क सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Narayanrao, H. L. "A Brief on Indian Literature and Languages."
2. Raghavan, V. "Sanskrit Literature." Indian Literature 7.2 (1964): 86-89.
3. Raghavan, V. "A Survey of Sanskrit." Indian Literature 21.6 (1978): 89-106.
4. Tripathi, Radhavallabh. "In the tradition of Sanskrit literature, each text generally begins with spelling out.
5. " Mahabharata Now: Narration, Aesthetics, Ethics (2017).
6. वेद व्यास महाभारत स्वर्गारोहण ५–• ५ आदिपर्व • २–४. गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण
7. वेद व्यास महाभारत आदिपर्व १३४–१५ गीताप्रेस, गोरखपुर,संस्करण
8. वेद व्यास महाभारत आदिपर्व • २–५‣ गीताप्रेस, गोरखपुर,संस्करण
9. वेद व्यास श्रीमद् भागवत महापुराण १–४–१• –१.
10. वेद व्यास श्रीमद् भागवत महापुराण १–४–१• •–२३
11. वेद व्यास श्रीमद् भागवत महापुराण १–४–२४
12. वेद व्यास श्रीमद् भागवत महापुराण १–४–२५
13. वेद व्यास श्रीमद् भागवत महापुराण माहात्म्य २–• ‣ –‣ ३
14. वेद व्यास श्रीमद् भा•वत महापुराण माहात्म्य ३–३४–३•

अंत टिप्पणी

1. *महाभारत स्वर्गारोहण ५.६५ आदिपर्व ६२.४८*
2. *गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण*
3. *महाभारत आदि पर्व १०४.१५ गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण*
4. *महाभारत आदिपर्व ६२.५७ गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण*
5. *श्रीमद् भागवत महापुराण १.४.१६–१८*
6. *श्रीमद् भागवत महापुराण १.४.१९–२०*
7. *श्रीमद् भागवत महापुराण १.४.२४*
8. *श्रीमद् भागवत महापुराण १.४.२५*
9. *श्रीमद् भागवत महापुराण माहात्म्य २.६७–७०*
10. *श्रीमद् भागवत महापुराण माहात्म्य ३.३४–३६*